रामकथा और नेपाली रामायण

बीज शब्द : राम कथा, नेपाली रामायण, भानुभक्त, भानुभाक्त का रामायण, आध्यात्म रामायण, नेपाली साहित्य

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

भगवान रामचन्द्र की कथा विश्व के कई देशों में न केवल प्रचलित हैं, वरन् इसके सन्दर्भ में विविध प्रकार के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता रहा है। इन देशों में राम कथा से सम्बन्धित विविध प्रकार के साहित्य भी उपलब्ध है। भारत के पड़ोसी देश नेपाल में भी राम कथा काफी लोकप्रिय है। प्रस्तुत शोध आलेख में नेपाली रामायण की लोकप्रियता उसकी कहानी, भाषा, काव्य सौन्दर्य आदि का विश्लेषण किया गया है।

विभा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए-वी. कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

योगेन्द्र प्रताप सिंह
हिन्दी विभाग,
डी.ए-वी. कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

एशिया महाद्वीप के अनके देशों में भगवान रामचन्द्र की पावन गाथा का गान अनेक शताब्दियों से होता चला आया है। भारत के पड़ोसी देश नेपाल में भी रामकथा भारत के समान ही लोकप्रिय है। सीता जी की जन्मभूमि नेपाल के जनकपुर में है। जहाँ आज भी रामनवमी के पर्व पर मेले का आयोजन होता है। जनकपुर रामभक्ति का केन्द्र माना जाता है। हनुमन्ते नामक नदी के तट पर हनुमान जी ने संजीवनी बूटी ले जाते समय कुछ समय विश्राम किया था, ऐसी यहाँ मान्यता है, जिसका प्रमाण यहाँ के रामघाट और हनुमान घाट एवं राम जी और हनुमान जी के मन्दिरों के रूप में मिलता है।

नेपाल में श्री रामचन्द्र जी से जुड़े सभी पर्वों को बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। विजयादशमी, रामनवमी के उत्सव धूम-धाम से आयोजित होते हैं। मन्दिरों में भजन-कीर्तन और अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस और भानुभक्त की रामायण का पाठ होता है। भारतभूमि नेपालियों के लिए तीर्थ के समान है, विशेष रूप से अयोध्या, जो रामजी की जन्मस्थली है। नेपाल के राजाओं ने अनेक राममन्दिरों का निर्माण कराया है जिससे ज्ञात होता है कि ये शासक भी रामभक्ति में विश्वास रखते थे। मल्ल, गोरखा व राणा शासन काल में अनेक राममन्दिर बने। काठमाण्डू में बागमती नदी के तट पर 14वीं शती में रामजी के साथ लव-कुश की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

अनेक शताब्दियों तक नेपाल की राजभाषा संस्कृत रही। राजा महाराजा एवं विद्वान, सभी संस्कृत में काव्यरचना करते थे। धीरे-धीरे संस्कृत भाषा का ह्रास हुआ और नेपाली ने राजभाषा का रूप ग्रहण किया। नेपाल में अवधी, ब्रज और खड़ी बोली में भी राम साहित्य का सृजन हुआ किन्तु स्थानीय नेपाली भाषा में रामकथा को जन-जन तक पहुंचाने का श्रेय भानुभक्त नामक व्यक्ति को है। भानुभक्त संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, उन्होंने संस्कृत में भी रचनाएँ की हैं, किन्तु नेपाली भाषा के प्रथम प्रमुख कवि होने का गौरव उन्हें ही, प्राप्त हुआ, जो नेपाली रामायण के प्रणयन द्वारा सम्भव हो सका।

श्री भानुभक्त का जन्म 1814 ई. में काठमाण्डू से लगभग 80 मील दूर रन्घा ग्राम के उपाध्याय ब्राह्मण कुल में हुआ था। उनके पिता श्री धनंजय सरकारी नौकरी में थे। अत: भानुभक्त का लालन-पालन उनके पितामह श्रीकृष्ण आचार्य ने किया। विद्वान होने के कारण उन्होंने भानुभक्त को संस्कृत साहित्य, व्याकरण और ज्योतिष की शिक्षा स्वयं दी। सन् 1849 ई. में अपने किसी मित्र के मुकदमें के सन्दर्भ में भानुभक्त को काठमाण्डू आना पड़ा, जहाँ प्रधानमंत्री के भाई का आश्रय मिलने से उन्हें जागीर प्राप्त हुई। जागीर के हिसाब में कवि मन, सामंजस्य

न बिठा सका और गड़बड़ी हो गई, परिणामस्वरूप इन्हें कारागार की सजा मिली। कारागार में रहते समय ही उन्होंने नेपाली भाषा में रामायण के अयोध्याकाण्ड से सुन्दरकाण्ड तक के अध्याय लिखे। लगभग पांच माह बाद कारागार से मुक्त होने के बाद शेष रामायण की रचना सम्पन्न। सन् 1852 ई. से प्रारम्भ हुई नेपाली रामायण की कथायात्रा को भानुभक्त ने 11 वर्षों में विराम दिया। श्री सूर्यविक्रम ज्ञवाली ने भानुभक्त रचित इस 'नेपाली रामायण' का सम्पादन किया है जिसमें बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड नामक अध्याय हैं।

इस रामायण को नेपाल में अत्यन्त लोकप्रियता मिली, जिसे 'भानुभक्त का रामायण' कहा गया। निरक्षर भी इसका पाठ करते हैं। झोपड़ी से महलों तक यह प्रचलित हुई। नेपाल में विवाह के अवसर पर इसके छन्द पढ़े जाते हैं। इसके द्वारा नेपाल की सामान्य जनता ने रामकथा के साथ-साथ भक्ति, ब्रह्म, माया, कर्मयोग, वैराग्य का ज्ञान प्राप्त किया। नेपाल के बाहर बसे प्रवासी जो सिंगापुर, मलेशिया, बर्मा एवं अन्य देशों तक फैले हुए हैं, इस कृति को अपने साथ रखते हैं। भानुभक्त की मृत्यु 54 वर्ष की आयु में 1868 ई. में हुई। भारत में इस रामायण का सर्वप्रथम प्रकाशन काशी के 'भारत जीवन प्रेस' से हुआ। बाद में 1954 ई. में बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री हीरेन्द्र कुमार मुखोपाध्याय व नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग के प्रयासों से नेपाली रामायण का परिशोधित संस्करण गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित हुआ, जिसकी भूमिका विद्वान एवं साहित्य मर्मज्ञ श्री कन्हैया माणिकलाल मुंशी ने लिखी, जो उस समय उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी थे। इसका सम्पादन श्री सूर्यविक्रम ज्ञवाली ने किया था।

नेपाली रामायण का कथा विधान-

नेपाली रामायण के प्रणेता भानुभक्त ने 'अध्यात्म रामायण' को अपना आधार ग्रन्थ बनाया। कहीं-कहीं इसकी पंक्तियां ज्यों की त्यों नेपाली भाषा में रूपान्तरित मिलती हैं, किन्तु रामकथा अपने वर्णन में सर्वथा मौलिक है। यह मौलिकता संक्षेपीकरण के रूप में है। रामचरितमानस में अध्यात्म रामायण से प्रेरणा लेकर तुलसीदास ने भी अनेक स्तुतियों का समावेश किया है। अध्यात्म रामायण में अहिल्या रामचन्द्र जी की स्तुति 19 श्लोकों में करती हैं। नेपाली रामायण में यह स्तुति केवल एक पंक्ति में भानुभक्त ने करवाई है-

'पूजा स्तुति गरेर राम सित बिदा मागली पतिथ्यैं गइन'

नेपाली रामायण मे लम्बे दार्शनिक विवेचन के स्थान पर कथा के अनुसार संक्षिप्त शैली में आध्यात्मिक चर्चा हुई है। भानुभक्त ने बताया है कि भक्ति के नौ साधनों (नवधा भक्ति) में पहला 'सत्संग' है। इसकी साधना करने पर शेष कुछ नहीं बचता। संक्षिप्तता पर केन्द्रित रहने से नेपाली रामायण की रामकथा का प्रवाह अनेक स्थानों पर अवरुद्ध हुआ है, जैसे- राम के वनवास का प्रसंग अत्यन्त मार्मिक हो सकता था, किन्तु अयोध्याकाण्ड मे भानुभक्त ने इस भावपूर्ण प्रसंग की उपेक्षा की है। वे राम के ब्रह्मत्व को सिद्ध करने के आग्रही दिखाई देते हैं, अत: नेपाली रामायण में ऐसे भावुक प्रसंग उन्होंने आने ही नहीं दिए हैं, जो राम को मात्र मानव बताते हैं।

नेपाली रामायण में शिव-पार्वती संवाद के रूप में राम कथा प्रस्तुत की गई है। पार्वती राम के ब्रह्मत्व पर शंका करती हैं कि यदि वे ब्रह्म हैं तो नारी के वियोग (सीता विरह) में दु:खी क्यों हैं-

'सीता रावणले जसै हरि दियो ठूलै विपत्मा परया'

*　　*　　*　　*

'इन्मा यो सब देखियो त कसरी जान्नू इ ईश्वर भनी'

कश्यप ऋषि और अदिति ने तपस्या कर भगवान को पुत्र रूप में मांगा था, वे ही दशरथ और कौशल्या के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिए। शापग्रस्त अहिल्या का राम के चरणों से उद्धार होना, सरस्वती द्वारा कैकेयी और मन्थरा का हृदय परिवर्तन, लक्ष्मण और निषादराज गुह का दार्शनिक संवाद, खर-दूषण वध से रावण का ब्रह्म का पृथ्वी पर अवतार जान लेना, आदि प्रसंग नेपाली रामायण में रामकथा को विस्तार देते हैं, जो तुलसीदास के रामचरितमानस के प्रसंगों से भी साम्य रखते हैं। युद्ध क्षेत्र में रावण के संहार के समय बारम्बार सिर व हाथ उगने का कारण उसकी नाभि में अमृत का होना था, नेपाली रामायण में यह प्रसंग अध्यात्म रामायण के 'नाभिदेशे*मृतं तस्य कुण्डलाकारसंस्थितम्' का अनुगमन करता है। राम इस अमृत को सुखाकर ही रावण को मार पाए-

'फेर अम्रित् पानि नाभिमा छ तब यो मर्दै काट्य पनी।'

इसी तरह बालकाण्ड में कथाओं की सूची जैसा वर्णन है। सुन्दरकाण्ड को अनावश्यक विस्तार मिला है। दार्शनिक विवेचन कथा के अनुपात से अधिक है, अत: नेपाली रामायण में कथा मे असन्तुलन आभासित होता है।

नेपाली रामायण की भाषा एवं काव्य सौन्दर्य-

भानुभक्त ने नेपाली रामायण में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग कर उसे साहित्यिक रूप देने का प्रयास किया है। त्रैलोक्य, सन्निधि, द्रोह, पुण्य, करुण, शुभाशुभ जैसे शब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त हुए हैं, किन्तु ये तत्सम रूप वहाँ विकृत हुए हैं, जहाँ छन्द में प्रयुक्त 'गण' के अनुसार उन्हें ठूँसने की कोशिश हुई है, जैसे- 'विन्ती', 'द्योता' आदि।

भारत पर मुगलों के शासन के कारण फारसी भाषा का चलन राज-काज में, एक समय में होने लगा था। नेपाली भाषा में भी अरबी-फारसी के अनेक शब्दों का आमेलन हुआ- सुख, इरादा, मालिक, मुकाम, रसद, खिल्लत, लस्कर, हुकुम जैसे शब्दों का प्रयोग अनेक प्रसंगों में दृष्टिगत होता है। नेपाली भाषा के ठेठ शब्दों को भानुभक्त ने अपने रामायण में स्थान दिया है, जिससे भाषा जनोपयोगी होने के साथ-साथ हल्की भी हुई है। नेपाली रामायण में कवि ने प्रकृति को वर्णन का विषय नहीं बनाया है।

कहीं-कहीं कुछ पंक्तियाँ दृष्टिगत हो जाती हैं। पम्पा सरोवर और लंका के उपवन में भ्रमरों के वर्णन में 'प्रकृति' यदा-कदा आई है-

'भ्रमर हरू लताका फूलमा हल्कि हल्ली।
घुनुनु घुनुनु गर्दै हिंड्दछन् वल्लि वल्लि।।'

अध्यात्म रामायण में मानवीय आवेगों की अवहेलना नहीं हुई है, प्रसंग अत्यन्त भावपूर्ण व सरस हैं, किन्तु इसी ग्रन्थ को आधार बनाकर लिखी गई नेपाली रामायण में रामकथा के मार्मिक प्रसंगों को कवि आवेगरहित, भावरहित होकर प्रस्तुत करता है। वह कुछ पंक्तियों में इन प्रसंगों को उल्लिखित कर आगे बढ़ जाता है। भानुभक्त स्मरण दिलाते रहते हैं कि राम नर लीला कर रहे हैं-
'तहाँ लीला नरै को गरी।'

सीता हरण, लक्ष्मण मूर्च्छा, सीता त्याग जैसे अनेक भावपूर्ण प्रसंगों का उल्लेख भर करने से, मार्मिकता स्वत: ही समाप्त हो गई है। नेपाली रामायण में 'भक्ति' का वर्णन भी विवेक संयत है, वहाँ विह्वल भक्ति के दर्शन कदापि नहीं होते। जीव-जगत की नश्वरता दिखाकर कवि सदा ब्रह्म की तरफ उन्मुख रहता है-

'माया छ यो जगत् भनि नित्य जानी।
आनन्द यस् विषयमा रति भर न मानी।।'

सीता का चित्रण ब्रह्म की मूल शक्ति के रूप में हुआ है। उन्हें माया, लक्ष्मी और जगदम्बिका का रूप कहा गया है-
'मुल् शक्ती प्रभु की अनन्त गुणकी सो दिव्य मूर्ती बनी।'
और
'माया मोरि सिता भयेर रहनिन् छोरी जनक की भई।।'

नेपाली रामायण के अन्य सभी पात्र, दशरथ से लेकर रावण तक राम के ब्रह्मत्व की धुरी के आस-पास ही घूमते हैं। वे उद्वेग रहित दिखाए गए हैं। उनके व्यक्तित्व का विकास सहज नहीं हो पाता। कवि का उद्देश्य ऐसा है भी नहीं। नेपाली रामायण के राम को स्वयं भी ज्ञात है कि वे भू-भार को हरने के लिए अवतरित हुए हैं। अपने ब्रह्मत्व का परिचय वे सीता, लक्ष्मण को स्वयं देते दृष्टिगत होते हैं। माता कौशल्या राम के चरणों में गिरकर विनती करती हैं-
'आइन पाऊ परिन् फेर् विनतिपनि गरिन् राम जी का चरण् मा'

यज्ञ की रक्षा होने के बाद विश्वामित्र आदर सहित 'हुजूर' के सामने खड़े हैं-
'गर्नन आदर भक्तिले हजूर का साम्ने हुन्या छन् खड़ा।'

यानी आदरणीय पात्र भी अपना पद भूलकर राम के सम्मुख विनीत दिखाए गए हैं। ब्राह्मणों में अत्रि ऋषि को राम ने अवश्य प्रणाम किया है।

नेपाली रामायण में राम का मानव रूप कहीं-कहीं पर आ पाया है। विभीषण के शरण में आने पर राम कहते हैं-
'लिन्छू शरीण यदि उ शत्रु ह्वस् दयैले।
मेरे ब्रतै छ यहि छोड़छु कसोरि ऐले।।

उनके मानव रूप में संयम और विवेक का सुन्दर मेल हुआ है। नेपाली रामायण में भानुभक्त ने संस्कृत के वर्णिक छन्दों का प्रयोग किया है जिसमें 'शार्दूलविक्रीड़ित' छन्द प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त वसन्ततिलका, मालिनी, इन्द्रवज्रा, शिखरणी छन्द भी आए हैं। भानुभक्त के पूर्व नेपाली में इन छन्दों का प्रयोग नहीं हुआ है। कवि ने ह्रदय-दीर्घ के हेर- फेर से छन्द में प्रयुक्त गणों का सामंजस्य बैठाया है। कई शब्दों को हलन्त करने पर छन्द बन पाया है।

नेपाली रामायण पर युगीन प्रभाव-

भानुभक्त की रामायण में जिस संस्कृति का वर्णन है, वह हिन्दू संस्कृति है, इसीलिए भारत और नेपाल राजनीतिक दृष्टि से अलग होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से एक हैं। इस कृति में यत्र-तत्र ऐसे वर्णन मिल जाते हैं जो दोनो देशों की सांस्कृतिक एकता को सूत्रबद्ध करते हैं। नेपाली रामायण में राजकुमारों के जातकर्म, व्रतबन्ध व विवाह संस्कारों का वर्णन हैं इसी क्रम में पारिवारिक संबंधों की छटा भी दिखाई देती है। हिन्दू संस्कृति में छोटे भाई को बड़े भाई (दाज्यू) की सेवा करने, बहू को सास की सेवा करने का उपदेश किया जाता है। इसमें राम, सीता से अयोध्या में रहकर सास की सेवा करने के लिए कहते हैं-
'सास को टहलै गरी कन वर्षों त चौधे महाँ।'

उत्तर दक्षिण व देश देशान्तर के तीर्थों के दर्शन के माध्यम से सौहार्द्र व सांस्कृतिक एकता स्थापित करने की बात अध्यात्म रामायण में मिलती है, जहाँ सेतुबन्ध के समय राम, शिवलिंग की स्थापना करते हैं। संकल्पपूर्वक काशी से लाए गंगाजल से रामेश्वरम् में शिवलिंग के अभिषेक से पुण्य प्राप्त होता है। नेपाली रामायण में इस तथ्य का भी उल्लेख हुआ है-
'रामेश्वर भनि नाम् चलोस अब उपर संकल्प यहाँ लिई।
गंगाजल् लिन काशि गै कन उजल्ल्याई नुहाई दिई।।'

कवि सामाजिक स्थितियों से उदासीन नहीं रह सकता। वह अपने समय के समाज के आदर्शों और विसंगतियों को अपनी रचनाओं में अवश्य दर्शाता है। भानुभक्त ने भी अपने समय के वर्णाश्रम व्यवस्था में आई शिथिलता को इंगित किया है-
'जाती धर्म रह्वैन क्षत्रिह्यमा जो छन्इ नीचाहरू।
शूद्रादी तपस्वि होइ रहनन् बाझ्ण सरीका बनू।।'

रामराज्य का वर्ण भी करते हैं-
'राजा श्री रघुनाथ हुँदा पृथिवीमा शस्यादि खूपै बढ्यो।
थीयानन् अति गन्ध जौन फुलमा तिन्मा सुगन्धी बढ्यो।।'

पृथ्वी पर शस्य समृद्धि हुई, पुष्पों में सुगन्ध बढ़ी, कहीं विधवा विलाप नहीं, रोग-व्याधि नहीं, बूढ़ों के आगे बालकों की मृत्यु नहीं होती, सभी प्राणी धर्म का पालन करते थे। इस तरह के वर्णन 'रामचरिमानस' के रामराज्य से साम्य रखते हैं।

नेपाली रामायण में कवि ने भगवान के अवतार के लेने का उद्देश्य-सज्जनों की रक्षा, दुर्जनों के नाश एवं धर्म की

शेष पृष्ठ 50 पर

to dependency on external support, without the participation of locals. Thus, to create a sustainable health sys-tem in Nepal the issues of the availability of domestic resources, both workers and supplies and local participation needs to be seriously considered. Very recently, the effect of intestinal helminhiasis in the loss of certain nutrients in rural areas has been noted which suggest the need to emphasize preventive medicine. It is expected that the newly established Medical Colleges will con-tribute significantly to providing the much needed various types of health personnel such as nurses, medical technologists, pharmacists and radiographers in future, although at present, these are producing only doctors. Although this report is not a detailed pic-ture of the health system in Nepal, it may give some kind of direction for all those concerned including the donor countries and/or agencies in designing the future health developmental programs for Nepal.

References:-

1. Scheil-Adlung, Florence B. 2011. Beyond legal coverage: assessing the performance of social health protection. International Social Security Review. 2011 Jul-Sep; 64(3):21-38. DOI: 10.1111/j.1468- 246X.2011.01400.x
2. International Labour Organization. World social security report 2010/11: providing coverage in times of crisis and beyond. Geneva: ILO, 2010.
3. World Health Report. Health systems financing: the path to universal coverage. Geneva: WHO, 2010.
4. Barros AJ, Ronsmans C, Axelson H, Loaiza E, Bertoldi AD, França GV, Bryc J, BoermaJT, Victora CG. Equity in maternal, newborn, and child health interventions in Countdown to 2015: a retrospective review of survey data from 54 countries. The Lancet. 2012 Mar 31;379(9822):1225-33. doi: 10.1016/ S0140-6736(12)60113-5.
5. World Health Organisation. The world health report 2013: research for universal health coverage. Geneva: WHO, 2013.
6. World Health Organization. World malaria report 2013. Geneva: WHO, 2013.
7. Mumba M. Visschedijk J, van Cleeff M, Hausman B. A piot model to analyse case management in malaria control programmes.
8. Rai SK, Pokhrel BM, Tuladhar NR, Khadka JB, Upadhyay MP. Methicilin resistant coagulase-negative Staphylococci. J. Inst. Med. (Nepal) 1987; 9: 23–28.
9. Rai SK, Tuladhar NR, Shrestha HG. Methicillin resistant Staphylococcus aureus in a tertiary medical care center, Nepal. In-dian J. Med. Microbiol. 1990; 8: 108–109.
10. Manandhar R, Yamaguchi T, Gurung G, Tuladhar NR, Rai SK, Jha R, Singh A. Chlamydial infection in women attending TU Teaching Hospital. J. Inst. Med. (Nepal) 1996; 18: 160–163.
11. Rai SK, Shibata H, Sumi K, Uga S, Ono K, Shrestha HG, Matsuoka A, Matsumura T. Serological study of Leptospira in-fection in Nepal by one-point MCA method. J. Infect. Dis. Anti-microb. Agents 2000; 17: 29–32.
12. Shrestha AD. Cholera in Kathmandu valley: how prevalent is it? J. Nepal Med. Assoc. 1991; 29: 193–196.
13. Ohara H, Ise K, Chosa T. Nepal de houdousareta kibyo ni tsuite. Nettai 1997; 30: 10–16.
14. Shivesh. Preventive Health Care: A Determinant of Quality of Life. International Journal of Basic and Life Sciences 2015; Volume 3 (2015), Issue No. 2 (Online).
15. Shiba & others. The Health System in Nepal— An Introduction. Environmental Health and Preventive Medicine 6, 1–8, April 2001.

पृष्ठ 32 का शेष

रक्षा बताया है, यही दृष्टिकोण रामचरितमानस और भगवद्‌गीता में भी है।

'भू भार हर्न निमित आज भगवान् यस् पृथ्वितलमा झरया।'

स्वयं राम बाली से धर्म की स्थापना हेतु अवतार लेने ही बात कहते हैं-

'धर्म स्थापन गर्नलाइत यहाँ औतार मैले लियाँ।'

भक्ति में 'नाम-जप' का विशेष महत्व बताया गया है। प्रत्येक काल में राम-नाम की महिमा प्रतिपादित हुई है। गोस्वामी तुलसीदास, असम के शंकरदेव और बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने नाम-जप की महत्ता निरूपित की है। नेपाली रामायण में भानुभक्त ने बाली के प्रसंग में नाम-जप की महत्ता बताते हुए कहा है- 'नामोच्चारणले फगल् सहजमा संसार सागर तरी।' अर्थात राम का नाम लेने मात्र से संसार सागर से तरा जा सकता है। विभीषण भी यहाँ राम के चरणों में निष्काम भक्ति माँगते हैं। इसी प्रकार नेपाली रामायण, भक्ति के क्षेत्र में 'सत्संग' और गुरूकृपा' पर विशेष बल देता है। भक्ति में जात-पात, ऊँच-नीच का भेद नहीं होता। जातिभेद, वर्गभेद मिटाने का प्रयत्न भक्ति के माध्यम से मध्यकाल के हिन्दी कवियों ने अधिक किया है। नेपाली रामायण में भानुभक्त ने शबरी के मुख से, हीन कुल और स्त्री जाति की होते हुए भी राम के चरणों में ही अपने सद्‌गति कहलवाई है-

'हे नाथ! हिन् कुल की स्त्रिजाति म गरीब् जान्दीन तिम्रोस्तुति
आधार् मात्र फगत् छ यै चरणमा यस्तै छ मेरो गति''

इस तरह अध्यात्म रामायण से प्रेरणा लेकर भानुभक्त ने नेपाली रामायण के प्रस्तुतीकरण में नेपाल के सामान्य जनमानस की मन:स्थिति को केन्द्र में रखा है। देश-विदेश में असंख्य रामकाव्य लिखे गए हैं जिसमें प्रत्येक ने स्थानीय विशेषताओं के अनुरूप ढलकर कुछ पृथकता बनाई। भारत और नेपाल सांस्कृतिक दृष्टि से एक हैं, दोनों देशों की सीमाएँ लगी हुई हैं। जनसाधारण रोजगार और व्यापार, शिक्षा आदि के लिए परस्पर आने-जाने के लिए मुक्त है, अत: नेपाल की रामायण किसी भी भारतीय भाषा के रामायण की तरह अतुलनीय है, वन्दनीय है।

संन्दर्भ:-

1. ढुंढिराज भंडारी नेपाल का आलोचनात्मक इतिहास, काठमाण्डू, 2027 विकमी।
2. भानुभक्त को रामायण, सूर्यविक्रम ज्ञवाली, दार्जिलिंग, 1954
3. मानस चतुश्ती ग्रन्थ, रायबरेली, 1974, नेपाल में रामोपासना और हिन्दी रामकाव्य, रुद्रेन्द्रनाथ शर्मा।
4. कामिल बुल्के रामकथा उत्पत्ति और विकास, द्वितीय संस्करण, प्रयाग, 1962
5. डॉ. रमानाथ त्रिपाठी पूर्वांचलीय रामकाव्य एवं नेपाली रामायण, अनिल प्रकाशन, दिल्ली 2001
6. सौयद नजमुलरजा रिजवी, नेपाल का इतिहास,(1742-1846), ज्ञानदा प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

◆◆◆